भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वितीय: पाठनाम स्वर्णकाक:

ता: 20-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- सूर्योदयात्प्राग् ग्रामाद्बहि: पिप्पलवृक्षमनु त्वयागन्तव्यम् ।
  अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि ।
  प्रहर्षिता बालिका निन्द्रामपि न लेभे ।
- **शब्दार्थ**

  प्राग् – पहले ,पिप्पलवृक्षम् -पीपल के वृक्ष के
  अनु – पीछे , आगन्तव्यम्
  तुभ्यम् -तुम्हें ,प्रहर्षिता -प्रसन्न
  निद्राम् -नींद को ,लेभे -ली/ ले पाई

  सरलार्थ

  तुम सूर्योदय से पहले गांव के बाहर पीपल के वृक्ष के पीछे आना।
  मैं तुम्हें चावलों का मूल्य (कीमत) दे दूँगा। प्रसन्नता से भरी लड़की

  नींद भी नहीं ले पाई अर्थात् सो भी नहीं सकी।